प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ मनाने के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

13 जुलाई, 2006
नई दिल्ली

बहनो और भाइयो,

मैं आप सबका शुक्रगुजार हूं कि आपने कीमती समय और अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। मैं समझता हूं कि आज की चर्चा उपयोगी रही है और बहुत लाभकारी और दिलचस्प सुझाव दिए गए हैं।

मुझे यकीन है कि 1857 की आजादी की पहली लड़ाई की 150वीं वर्षगांठ मनाने के इस अवसर का इस्तेमाल हमारे स्वतंत्रता संग्राम की भावना को पुनर्जीवित करने हेतु किया जाना चाहिए। मैं समझता हूँ कि भारतीयों की नई पीढ़ी को हमारे पूर्वजों की देशभक्ति और आदर्शवाद का अहसास कराना होगा। मेरा यह भी मानना है कि यह अवसर इस संग्राम में प्रदर्शित की गई भारतीय लोगों की एकता से प्रेरणा हासिल करने का अवसर है। समुदायों, धर्मों, प्रांतों, जातियों और भाषाओं से ऊपर उठकर भारत के लोग विदेशी शासन से आजादी पाने की लड़ाई में साथ आए।

मैं यह भी समझता हूं कि हमें स्वतंत्रता आंदोलन के सुरूचिपूर्ण सौंदर्य को फिर से प्रदर्शित करना होगा। हमारे राष्ट्रीय गीत, "वंदे मातरम" लिखे जाने के उत्सव का इस्तेमाल भारतीय राष्ट्रीयता के सांस्कृतिक और सौंदर्यपरक स्रोतों का पता लगाने हेतु करना चाहिए। मेरा यह भी मानना है कि हमें झांसी की रानी जैसी महिला नेताओं द्वारा अदा की गई भूमिका पर भी ध्यान देना चाहिए जिन्होंने उत्तराधिकार के लिंग भेद वाले कानूनों को लागू करने के अंग्रेजी सरकार के प्रयासों के विरूद्ध भी लड़ाई लड़ी। यह कई वर्षगांठों को मनाए जाने का वर्ष है। हम अपनी आजादी की 60वीं वर्षगांठ भी मना रहे हैं। हम जो कुछ भी करें उसमें हमें राष्ट्रीय आंदोलन के विचारों और आदर्शों को फिर से हासिल करना होगा।

हाल ही में, मैं वर्धा में सेवाग्राम गया था और वहां की सादगी जो गांधी जी के जीवन को दर्शाती है, से मैं सचमुच प्रेरित हुआ। मैं सोचता हूं कि हमें "सादा जीवन उच्च विचार" के इस संदेश को अपने युवाओं तक पहुंचाना चाहिए। हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के उत्सव का मौका अति राष्ट्रवाद, संकीर्ण राष्ट्रीयता और अंध राष्ट्र-भक्ति का अवसर नहीं बनना चाहिए बल्कि यह एक ऐसा अवसर होना चाहिए जिसमें हम अपनी अनेकता, अपनी उदारता, अपनी सभ्यताई विरासत, अखंडता और मानव सेवा के उन मूल्यों का उत्सव मनाएं जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन की विशेषता को निरूपित किया। मुझे उम्मीद है कि हम संगठित होने के लिए चलाए जाने वाले कार्यक्रमों के जरिए इन विचारों और मूल्यों का प्रचार-प्रसार कर सकते हैं।

धन्यवाद,

******